

संविदा एवं नियमित शिक्षकों के कार्यगत-तनाव में भिन्नता का एक तुलनात्मक अध्ययन : बिहार राज्य के संदर्भ में

राकेश कुमार

शोध छात्र, मनोविज्ञान विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

डॉ० एस० डी० मिश्रा

एसोसिएट प्रोफेसर, मनोवैज्ञानिक शोध एवं सेवा संस्थान, पटना विश्वविद्यालय, पटना

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र बिहार के संविदा एवं नियमित शिक्षकों के कार्यगत तनाव पर आधारित है। इस शोध-पत्र के माध्यम से यह जानने की कोशिश की गयी है कि विद्यालय में शिक्षण अवधि के दौरान संविदा एवं नियमित अध्यापकों में से कौन अधिक कार्यगत तनाव का अनुभव करता है। इस अध्ययन को पूरा करने के लिए बिहार राज्य के प्रमुख चार जिलों यथा अररिया, पटना, वैशाली एवं जमुई से कुल 300 शिक्षकों (150 संविदा एवं 150 नियमित) का चयन किया गया। ये सभी शिक्षक विभिन्न सरकारी विद्यालयों यथा प्राथमिक, मध्य, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से थे। इस प्रतिदर्श में शामिल शिक्षकों की आयु 18 से 60 वर्ष की थी। इस प्रतिदर्श का चयन सोद्देश्य नमूना चयन विधि (Purposive Sampling Technique) के द्वारा किया गया। परिणाम में पाया गया कि अध्यापन कार्य के दौरान संविदा शिक्षकों को नियमित शिक्षकों की तुलना में अधिक तनाव का सामना करना पड़ता है। इससे उनके स्वास्थ्य पर कई नकारात्मक मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। अतः सरकार एवं विद्यालय प्रशासन को चाहिए कि इन संविदा शिक्षकों के समस्याओं के निराकरण का यथासंभव प्रयास करे ताकि शिक्षण के माध्यम से देश का भविष्य उज्वल किया जा सके।

मुख्य बिन्दु: संविदा, नियमित शिक्षक, कार्यगत तनाव, विद्यालय, स्वास्थ्य, मनोवैज्ञानिक प्रभाव, शिक्षण कार्य

प्रस्तावना

कार्यगत तनाव का तात्पर्य व्यक्तियों का उनके वातावरण के साथ एक विशेष प्रकार की अंतःक्रिया से होता है, जिसमें व्यक्ति अपनी कार्य-परिस्थिति के प्रति ऐसी ऋणात्मक या धनात्मक प्रतिक्रिया करते हैं, जिसके स्पष्ट लक्षण उनके दैनिक क्रियाकलापों में दिखाई देते हैं। जैसे-अन्यत्रवासिता, श्रम-परिवर्तन में वृद्धि, संगठनात्मक आबोहवा का नष्ट हो जाना, संगठनात्मक निष्पादन की तीव्रता में कमी तथा संगठनात्मक प्रभावशीलता का कमजोर पड़ जाना आदि। यदि अध्यापकों के संदर्भ में देखा जाय तो उनके अध्यापन कार्य में रूचि का कम हो जाना, क्रोध, चिंता, विषाद, घबराहट, चिड़चिड़ाहट, नीरसता, निष्क्रियता, आक्रामकता, विशाद, आत्महत्या की प्रवृत्तियों में वृद्धि, अधिक भोजन करना, भूख नहीं

लगना, नींद नहीं आना, धूम्रपान में वृद्धि हो जाना, मद्यपान में वृद्धि होना, सिरदर्द, पेटदर्द, पीठदर्द तथा छाती दर्द आदि की भी शिकायत कार्य-तनाव की अवस्था में होती पायी गयी है।

बीह एवं न्यूमैन (1978) के अनुसार कार्य-तनाव से तात्पर्य एक ऐसी अवस्था से होती है जो व्यक्ति तथा उसके कार्य के अंतःक्रिया का परिणाम होता है तथा इससे व्यक्ति में ऐसे परिवर्तन होते हैं जो उन्हें सामान्य क्रियाकलापों से विचलित होने के लिए बाध्य करते हैं।

लूथान्स (1989) के अनुसार “कार्य-तनाव बाह्य परिस्थिति के प्रति एक ऐसी अनुकूली अनुक्रिया है जिससे संगठन के सहभागियों में दैनिक, मनोवैज्ञानिक तथा व्यवहारात्मक विचलन होते हैं।”

कार्य-तनाव के कारण

कार्य-तनाव के क्षेत्र में किए गए अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि कार्य-तनाव के उत्पन्न होने के कई स्रोत हैं-

- क. कार्य-विशेषताओं से सम्बन्धित कारक
- ख. अंतर्वैयक्तिक सम्बन्धों से उत्पन्न कारक
- ग. वैयक्तिक कारक।

क. कार्य-विशेषताओं से सम्बन्धित कारक :

1. भूमिका-अतिभार
2. भूमिका-निम्नभार
3. निष्पादन-मूल्यांकन
4. काम के अनुसार वेतन

ख. अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों से उत्पन्न कारक:

1. अनुपयुक्त अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध है,
2. लोगों के साथ संपर्क की मात्रा
3. अन्य विभाग के लोगों के साथ संपर्क की मात्रा
4. संगठनात्मक अबोहवा

ग. वैयक्तिक कारक :

1. वृत्ति की आशंकाएँ
2. भौगोलिक गतिशीलता
3. जिन्दगी एवं जीवन-वृत्ति में परिवर्तन

कार्य-तनाव का प्रभाव

कार्य-तनाव के कुछ स्पष्ट परिणाम होते हैं। मनोवैज्ञानिकों द्वारा किए गए अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि तनाव की मात्रा साधारण रहने से कार्य-निष्पादन की उत्कृष्टता बनी रहती है, परंतु यदि तनाव की मात्रा अत्यधिक हो जाती है तो उससे कई तरह के कार्यों का निष्पादन तो प्रभावित होता ही है, साथ ही साथ उसकी मात्रा में जैसे-जैसे वृद्धि होती जाती है। निष्पादन का वक्र उत्तरोत्तर गिरता चला जाता है। जब व्यक्ति के लगातार लंबे समय तक तनाव के उच्च स्तर के अन्तर्गत कार्य करना पड़ता है, जैसा कि मैसलैक

(1982) ने कहा है कि एक विशेष तरह का अनुभव होता है जिसे बर्न आउट की संज्ञा दी गई है। इसमें व्यक्ति दैहिक, मानसिक एवं सांवेगिक रूप से थका हुआ महसूस करता है, तथा इससे व्यक्तिगत उपलब्धि के निम्न महसूस होने तथा भविष्य में भी सफलता न प्राप्त करने का भाव मजबूत हो जाता है। कार्य-तनाव के ऐसे तो कई स्पष्ट प्रभाव होते पाए गए हैं। परंतु उनमें निम्नांकित तीन तरह के प्रभावों का मनोवैज्ञानिकों ने अधिक ध्यान दिया है।

- क. मनोवैज्ञानिक प्रभाव
- ख. व्यवहारात्मक प्रभाव
- ग. दैहिक प्रभाव

क. मनोवैज्ञानिक प्रभाव

कार्य-तनाव के मनोवैज्ञानिक प्रभावों में अध्यापकों में क्रोध, चिंता, विशाद, घबराहट, चिड़चिड़ाहट, नीरसता आदि विकसित जाना, सांवेगिक स्थिति तथा मानसिक दशा में परिवर्तन, कुंठा या तनाव से कर्मचारियों में निष्क्रियता, आक्रामकता, विशाद, आत्महत्या की प्रवृत्तियों में वृद्धि आदि।

ख. व्यवहारात्मक प्रभाव

कार्य-तनाव के व्यवहारात्मक प्रभावों में अधिक भोजन करना, भूख नहीं लगना, नींद नहीं आना, धूम्रपान में वृद्धि हो जाना, मद्यपान में वृद्धि, घर पर रहना अधिक पसंद करना, कार्य से अनुपस्थित रहने की प्रवृत्ति, श्रम परिवर्तन की दर में वृद्धि हो जाती है, अन्यत्रवासिता, श्रम परिवर्तन, कार्य-निष्पादन पर नकारात्मक प्रभाव आदि।

ग. दैहिक प्रभाव- कार्य-तनाव के दैहिक प्रभावों में उच्च रक्तचाप, रक्त में कॉलेस्ट्रॉल अधिक मात्रा, हृदयरोग, व्रण, गठिया, कैंसर, सिरदर्द, पेटदर्द, पीठदर्द तथा छाती दर्द, जीवन प्रत्याशा में कमी आदि पायी जाती है।

शोध विधि

किसी भी शोध के लिए विधि तन्त्र ही शोध की प्रकृति निश्चित करती है। प्रस्तुत शोध का अभिगम मनोवैज्ञानिक, अन्वेषणात्मक, वर्णनात्मक, निगमात्मक

विश्लेषणात्मक, तार्किक एवं व्यवहारिक है। शोध कार्य मनोवैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है। सर्वप्रथम हम उन प्राथमिक स्रोतों का अध्ययन किये जो संविदा शिक्षकों के कार्यगत तनाव से सम्बन्धित थे। संविदा शिक्षकों से मिलकर उनके कार्य संबंधी तनाव से सम्बन्धित आँकड़ों को इकट्ठा किया गया। बिहार के विभिन्न हिस्सों में काम करने वाले संविदा शिक्षकों से मिलकर उनके कार्य स्थल पर कार्यगत तनाव से सम्बन्धित बातों के खंगालकर उसका समीक्षात्मक अध्ययन कर जो निष्कर्षतः प्राप्त हुआ उसे अपने शोध पत्र में यथास्थान रेखांकित करने का हमने प्रयास किया। विभिन्न कर्मक्षेत्रों यथा : अस्पतालाओं, स्कूलों एवं बैंकों से इस मद में जो भी सूचनाएँ मिली उसका समीक्षात्मक अध्ययन किया गया। मनोविज्ञान के विशिष्ट जानकार, विद्वतजन, लेखक से भी इस सम्बन्ध में तथ्य बटोरे गये। संविदा कर्मियों के नियमावलियों का भी अध्ययन किया। अध्ययन मौलिक (प्राथमिक) स्रोतों पर आधारित है।

प्रतिदर्श चयन

इस अध्ययन के लिए बिहार राज्य के प्रमुख चार जिलों (अररिया, पटना, वैशाली, जमुई) का चयन किया गया। प्रत्येक जिले से 75-75 अर्थात् कुल 300 शिक्षकों को चुना गया। इसमें 150 नियमित एवं 150 संविदा पर बहाल शिक्षकों को शामिल किया गया। ये सभी शिक्षक विभिन्न सरकारी विद्यालयों यथा प्राथमिक, मध्य, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से

थे। इस प्रतिदर्श में शामिल शिक्षकों की आयु 18 से 60 वर्ष की थी। इस प्रतिदर्श का चयन सोद्देश्य नमूना चयन विधि (Purposive Sampling Technique) के द्वारा किया गया।

परीक्षण सामग्री

इस अध्ययन में कुल दो (2) परीक्षण सामग्रियों का उपयोग किया गया, जो निम्न हैं :

अ. व्यक्तिगत आँकड़ा संग्रहण प्रपत्र : स्वनिर्मित

द. आकुपैशनल स्ट्रेस इन्डेक्स: श्रीवास्तव एवम् सिंह शोध अभिकल्प :

समूहान्तर तुलनात्मक शोध अभिकल्प का उपयोग किया जायेगा।

आँकड़ा संग्रहण

आँकड़ा संग्रहण का कार्य एक शान्त कक्ष में कराया गया। इस क्रम में शिक्षकों से सर्वप्रथम 'व्यक्तिगत आँकड़ा संग्रहण प्रपत्र' भरवाया गया। जिसके आधार पर उन्हें सरकारी एवं संविदा कर्मी शिक्षकों में बाँटा गया। तत्पश्चात उनसे आकुपैशनल स्ट्रेस इन्डेक्स तथा व्यक्तिगत आँकड़ा संग्रहण प्रपत्र पर आँकड़े संग्रहित किये गये।

प्रदत्त विश्लेषण :

प्रदत्त विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधि (टी-टेस्ट, सहसम्बन्ध) के अतिरिक्त अन्य सांख्यिकीय तकनीकों का आवश्यकतानुसार उपयोग किया गया।

परिणाम

नियमित एवं संविदा शिक्षकों के तनाव स्तर में सार्थक भिन्नता के लिए काई-स्क्वायर परीक्षण

सारणी-1 : सारांश

	केस					
	वैद्य		मिसिंग		कुल	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
कार्य की प्रकृति बनाम तनाव के स्तर	300	100%	0	0%	300	100%

सारणी 2 :

कार्य की प्रकृति एवं तनाव-स्तर के मध्य क्रॉस सारणी

गणना		तनाव के स्तर							कुल
		अत्यन्त निम्न	निम्न	औसत से कम	औसत	औसत से अधिक	अधिक	अत्यन्त अधिक	
कार्य की प्रकृति	संविदा	0 (0-00%)	0 (0-00%)	0 (0-00%)	0 (0-00%)	12 (7-54%)	63 (39-62%)	84 (52-83%)	159 53%
	नियमित	0 (2.12%)	0 (0.00%)	0 (12.76%)	0 (46.80%)	0 (34.04%)	0 (4.25%)	0 (0.00%)	141 47%
कुल		3 (2.12%)	0 (0.00%)	18 (12.76%)	66 (46.80%)	60 (20.00%)	69 (23%)	84 (28%)	300 100%

सारणी 3

कार्ड-स्क्वायर परीक्षण

	मूल्य	स्वतंत्रता के अंश	संभाव्य सार्थकता दो दिशीय	मान्दे-कार्लो सार्थकता स्तर दो दिशीय		
				सार्थकता	सारणी% सार्थकता अन्तराल	
					निम्न सीमा	उच्च सीमा
पिर्यसन कार्ड-स्क्वायर	2.395E2 ^v	5	0.000	0.000 ^c	0.000	0.015
संभावना अनुपात	313.989	5	0.000	0.000 ^c	0.000	0.015
फिशर का सटीक परीक्षण	298.042			0.000 ^c	0.000	0.015
वैद्य केषों की संख्या	300					

व्याख्या

सारणी 1 दर्शाता है कि यहाँ संविदा एवं नियमित अध्यापकों की कुल संख्या 300 है। जिसमें 159 53% अध्यापक संविदा पर कार्य करने वाले हैं जबकि 141 47% नियमित अध्यापक हैं। सारणी 2 अध्यापकों की कार्य प्रकृति एवं तनाव के स्तर के मध्य क्रॉस-टेबुलेशन को दर्शाता है। इससे पता चलता है कि संविदा पर कार्य करने वाले अध्यापकों में से 52-83% अध्यापकों में अत्यन्त उच्च तनाव स्तर, 52.83% अध्यापकों में उच्च तनाव स्तर तथा 7-54% अध्यापकों में औसत से अधिक तनाव स्तर पाया गया है। इसी प्रकार नियमित

रूप से कार्य करने वाले अध्यापकों में से 4.25% अध्यापकों में उच्च तनाव स्तर, 34.04% अध्यापकों में औसत से अधिक तनाव स्तर, 46.80% अध्यापकों में औसत तनाव स्तर, 12.76% अध्यापकों में औसत से कम तनाव स्तर तथा 2.12% अध्यापकों में अत्यन्त निम्न स्तर का तनाव पाया गया। यदि तुलनात्मक रूप से देखा जाय तो पता चलता है कि संविदा अध्यापकों में उच्च से अत्यन्त उच्च तनाव का स्तर नियमित अध्यापकों की तुलना में अधिक पाया गया है जबकि नियमित अध्यापकों में अधिकतम औसत स्तर का तनाव पाया

गया है। जबकि कुछ नियमित अध्यापकों ने तो अत्यन्त निम्न एवं औसत से भी निम्न स्तर के तनाव को बतलाया है। इससे स्पष्ट होता है कि यद्यपि कि दोनों प्रकार के अध्यापकों में तनाव का स्तर कार्य के दौरान पाया जाता है। फिर भी संविदा शिक्षक, नियमित शिक्षकों की तुलना में अधिक तनाव स्तर का सामना करते हैं। सारणी 3 संविदा एवं नियमित अध्यापकों के मध्य तनाव स्तर की सार्थकता को दर्शाता है। सारणी से पता चलता है कि यहाँ सार्थकता का स्तर p का मान 0.00, जहाँ कि $ap < -05$ है। इससे पता चलता है कि संविदा एवं नियमित अध्यापकों के मध्य तनाव स्तर में सार्थक अन्तर है। इस प्रकार हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि बिहार में संविदा एवं नियमित अध्यापकों के मध्य तनाव स्तर में सार्थक भिन्नता है।

निष्कर्ष:

उपरोक्त व्याख्या से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अध्यापन कार्य के दौरान संविदा शिक्षकों को नियमित शिक्षकों की तुलना में अधिक तनाव का सामना करना पड़ता है। परिणाम स्वरूप उनके स्वास्थ्य पर कई नकारात्मक मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। अतः सरकार एवं विद्यालय प्रशासन को चाहिए कि वह अध्यापकों के हित में इन समस्याओं के निराकरण का प्रयास करे ताकि संविदा शिक्षक भी सुकून की जिंदगी जी सकें।



संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. अथेरटन, पी0 एवं जी0 किंगडन (2010)। द. रिलेटिव इफेक्टिवनेस एण्ड कॉस्ट्स ऑफ कान्ट्रैक्ट एण्ड रेगुलर टीचर्स इन इंडिया। इन्स्टीच्यूट ऑफ एजुकेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ लन्दन।
2. किंगडन, गीता एवं सिपाही मालिनी रॉव, वन्दना (2010) पैरा टीचर्स इन इंडिया : स्टैटस एण्ड इम्पैक्ट। इकोनॉमिक एण्ड पालिटिकल वीकली। मार्च 20, 2010, वाल्यूम xiv, नं0 12
3. गोविन्दा, आर0 एवं जोसेफीन, वाई (2004)। पैरा टीचर्स इन इंडिया : ए रिव्यू। पेरिस, फ्रांस: यूनेस्को इन्टरनेशनल इन्स्टीच्यूट फॉर एजुकेशन प्लानिंग।
4. मुरलीधरन, कार्तिक एवं सुन्दररमन, वेंकटेश (2010)। कान्ट्रैक्ट टीचर्स: एक्सपेरिमेंटल इवीडिएन्स फ्रांस: इंडिया।
5. श्रीवास्तव, ए0 के0 एवं सिन्हा, एम0एम0 (1977)। जॉब एन्जाइटी स्केल। वाराणसी, इंडिया: रूपा साइकोलॉजिकल सेन्टर।
6. श्रीवास्तव, ए0 के0 एवं सिंह ए0पी0 (1981), मैनुअल ऑफ द ऑकुपेशनल स्ट्रेस इंडेक्स। डिपार्टमेंट ऑफ साइकोलॉजी, बनारस यूनिवर्सिटी, वाराणसी: 1981।